शिष्यों को प्रशिक्षित करने के लिए प्रशिक्षण
सत्र 3: शिष्यत्व क्या है? (2ख)

रॉन लाइवली, एम.डिवी., एमए द्वारा ऑफ़र किया गया - BiblicalMentoring.org (अध्ययन)

चरण 1: प्रारंभिक प्रार्थना

चरण 2: प्रत्येक व्यक्ति स्मृति कविता को उद्धृत करता है: **गलातियों 2: 20**
"मुझे मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया है। यह अब मैं नहीं है जो जीवित है, बल्कि मसीह है जो मुझमें रहता है। और जो जीवन मैं अब शरीर में जीता हूं, वह परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करके जीता हूं, जिसने मुझसे प्रेम किया और अपने आप को मेरे लिए दे दिया।

चरण 3: *बाइबल अध्याय पढ़ें और चर्चा करें-* ***गलातियों 2***

चरण 4: व्यक्तिगत अनुप्रयोगों और/या समूह चर्चा के लिए प्रश्न:

एक. मैं प्रेरित पौलुस के साथ कह सकता हूं कि मुझे मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया है, लेकिन मैं और अन्य लोग कैसे बता सकते हैं कि एक सच्चा परिवर्तन हुआ है?

दो. एक विमान दुर्घटना के बारे में लेखक की कहानी बताना सीखें? वास्तव में स्वयं के लिए मरकर जीने के बारे में?

तीन. क्या आपने व्यक्तिगत रूप से मसीह के प्रायश्चित और छुटकारे में विश्वास करके उसका अनुसरण करने के लिए बुलावा या आज्ञा सुनी है?

चार. क्या आपने मसीह को प्रभु के रूप में मानने का फैसला किया है, उनके जैसा बनने वाले शिष्य बनाने के लिए कार्रवाई करके? आप की तरह?

पाँच. क्या आप फिलिप्स के कथन I से सहमत हैं और इसकी पुष्टि करते हैं कि "प्रजनन के बिना कोई शिष्यत्व नहीं है"। यदि हां, तो अपनी कार्य योजना को किसी ऐसे व्यक्ति के साथ साझा करें जो इस योजना को आशीर्वाद देने के लिए भगवान से प्रार्थना कर सकता है।

चरण 5*: पुस्तक की सामग्री पढ़ें और चर्चा करें:*

अध्याय 2 बी लेखक के अनुसार - कीथ फिलिप्स:

जबकि परमेश् वर का उद्धार का वरदान मनुष्य की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता को पूरा करता है, यह मानवतावादी, अपने स्वयं के लिए अच्छा काम करने के लिए पूरी तरह से उस अंतिम कारण को अनदेखा कर देता है जिसके अंतिम कारण मसीह क्रूस पर मर गया। परमेश् वर मनुष्य को उद्धार प्रदान करता है, मुख्य रूप से उन लोगों के माध्यम से स्वयं की महिमा करने के लिए जिनके पास उसके पुत्र का चरित्र है (इफिसियों 1:12)। परमेश् वर की महिमा मनुष्य के कल्याण से अधिक महत्वपूर्ण है (यशायाह 43:7)। कोई भी व्यक्ति जो उद्धार के उद्देश्य को समझता है, वह यह अनुमान लगाने की हिम्मत नहीं करेगा कि मसीह के प्रभुत्व को स्वीकार किए बिना किसी व्यक्ति को बचाया जा सकता है। यदि मैं अपने जीवन का प्रभु हूँ तो मसीह मेरे जीवन का प्रभु

नहीं हो सकता। मसीह के नियंत्रण में रहने के लिए, मुझे मरना होगा। मैं अपने आप को मरने और मसीह के साथ पहचान किए बिना शिष्य नहीं बन सकता जो मेरे पापों के लिए मर गया (मरकुस 8:34)। एक शिष्य अपने गुरु का अनुसरण करता है, यहाँ तक कि क्रूस तक। लंबे समय तक, मैंने "आत्म-मृत्यु" के व्यावहारिक निहितार्थों को समझने के लिए संघर्ष किया। यह मेरे जीवन में आत्म-त्याग को कैसे निर्धारित करेगा? यह अंत में पंजीकृत हो गया जब मैं गलातियों 2:20 पर ध्यान कर रहा था: "मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं; और यह अब मैं नहीं हूं जो जीवित है, परन्तु मसीह मुझ में रहता है ..."

मान लीजिए कि 1 जनवरी को, मैं कैनसस के ऊपर से उड़ान भर रहा था जब विमान में विस्फोट हो गया। मेरा शरीर जमीन पर गिर गया और मैं प्रभाव से मर गया। कुछ ही समय में एक किसान ने मेरी लाश की खोज की। कोई नाड़ी नहीं थी, कोई दिल की धड़कन नहीं थी, कोई सांस नहीं थी। मेरा शरीर ठंडा था। जाहिर है, मैं मर चुका था। इसलिए किसान ने एक कब्र खोदी। लेकिन जब तक उसने मेरे शरीर को धरती में रखा, तब तक उसे ढकने के लिए बहुत अंधेरा हो चुका था। यह तय करके कि वह सुबह खत्म कर देगा, वह घर लौट आया। तब मसीह मेरे पास आया और कहा, "कीथ, तुम मर चुके हो। पृथ्वी पर तुम्हारा जीवन समाप्त हो गया है। लेकिन मैं तुम लोगों में नए जीवन की सांस फूँकूँगा यदि तुम कुछ भी करने का वादा करते हो और मैं तुम्हें जहाँ भी भेजता हूँ, वहाँ जाओगे। " मेरी तत्काल प्रतिक्रिया थी, "बिलकुल नहीं! यह अनुचित है। यह गुलामी है। " लेकिन तब मुझे एहसास हुआ कि मैं सौदेबाजी की अच्छी स्थिति में नहीं था, और मैं जल्दी से होश में आ गया। मैं तहे दिल से सहमत हो गया। तुरंत, मेरे फेफड़े, हृदय और अन्य महत्वपूर्ण अंग फिर से काम करने लगे। मैं जीवन में वापस आ गया। मैं फिर से पैदा हुआ था! उस बिंदु से कोई फर्क नहीं पड़ता कि मसीह ने मुझे क्या करने के लिए कहा या उसने मुझे कहाँ जाने के लिए कहा, मैं इच्छा से अधिक था। कोई भी कार्य बहुत कठिन नहीं था, कोई भी घंटे बहुत लंबा नहीं था, कोई भी जगह बहुत खतरनाक नहीं थी। कुछ भी अनुचित नहीं था। क्यों? क्योंकि मेरा अपने जीवन पर कोई दावा नहीं था। मैं उधार के समय पर जी रहा था, मसीह के समय। कीथ की मृत्यु 1 जनवरी को कैनसस के मकई के खेत में हुई। तब मैं पौलुस के साथ कह सकता था, "मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं [मर गया हूं]; और यह अब [कीथ] नहीं है जो जीवित है, लेकिन मसीह [जो] मुझ में रहता है ..." यही आत्म-मृत्यु और फिर से जन्म लेने के बारे में है। मसीह का आदेश "मेरा अनुसरण करो" नए जीवन का अनुभव करने के लिए उनकी मृत्यु में भाग लेने का एक आदेश है। आप एक जीवित मृत व्यक्ति बन जाते हैं, पूरी तरह से उसके प्रति प्रतिबद्ध होते हैं। जीवन का एक बड़ा विरोधाभास यह है कि इस मृत्यु में जबरदस्त स्वतंत्रता है। एक मृत व्यक्ति को अब अपने अधिकारों, अपनी स्वतंत्रता या दूसरों की राय की चिंता नहीं है। जब वह क्रूस पर चढ़ाए गए मसीह के साथ एक आध्यात्मिक मिलन में शामिल हो गया, तो वे चीजें जो दुनिया द्वारा बहुत अधिक मूल्यवान थीं - धन, सुरक्षा और स्थिति - त्याग दी गई थीं। "अब जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उसकी अजूबाओं और इच्छाओं के साथ क्रूस पर चढ़ा दिया है" (गलातियों 5:24)। एक व्यक्ति जो क्रूस उठाता है, एक मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया जाता है, वह कल के बारे में चिंतित नहीं होता क्योंकि उसका भविष्य दूसरे के हाथों में होता है। एक आंतरिक शहर के कार्यकर्ता ने एक साहसी सड़क मंत्रालय स्थापित करने का सपना देखा। लेकिन जब उसने जिन चमत्कारों की आशा की थी, वे साकार नहीं हुए, तो उन्होंने दूसरों के सम्मान को प्रोत्साहित करने की उम्मीद में कल्पना का सहारा लिया, मुठभेड़ों को विकृत किया और काल्पनिक घटनाओं का निर्माण किया। वह भव्यता के अपने दर्शन का गुलाम बन गया, अपनी उम्मीदों का बंदी बन गया। उनकी अवचेतन प्रेरणा राज्य के लिए वीरतापूर्ण कारनामे करके ईसाई दुनिया का विस्मय और प्रशंसा जीतना था। उनके जुनून, सपने और दर्शन कभी सूली पर नहीं चढ़ाए गए। वह सफल होने और उत्पादन करने के दबाव से कभी मुक्त नहीं हुए। उन्होंने कभी भी उस मुक्ति का अनुभव नहीं किया जो साबित करने के लिए कुछ भी नहीं होने से, खोने के लिए कुछ भी नहीं होने से आती है। उनके पास शिष्यत्व की एक विकृत

धारणा थी। वह परमेश्वर की सेवा करना चाहता था ताकि वह महिमा प्राप्त कर सके। इसके विपरीत, एक मरे हुए व्यक्ति को परमेश्वर की महिमा के लिए सब कुछ करने के लिए स्वतंत्र किया जाता है (रोमियों 8:10)। वह जो कुछ भी है और जो कुछ भी उसके पास है उसे परमेश्वर के स्थायी निपटान में रखता है। मसीह के प्रभुत्व के प्रति उसका समर्पण उसे उसके द्वारा किए गए हर निर्णय, उसके द्वारा बोले गए हर शब्द और उसके द्वारा सोचे गए हर विचार में परमेश्वर को प्रसन्न करने का अधिकार देता है। एक शिष्य अपने पूरे जीवन और सेवकाई को आराधना के रूप में देखता है (1 कुरिन्थियों 10:31)।

आत्म-मृत्यु उसे परमेश्वर के साथ अपने प्रेम संबंध का आनंद लेने के लिए मुक्त करती है। आत्म-मृत्यु शिष्य बनने के लिए अनिवार्य अग्रदूत है। कोई भी व्यक्ति जिसने आत्म-मृत्यु का अनुभव नहीं किया है, वह अनुशासन प्रक्रिया में एक वैध कड़ी के रूप में योग्य नहीं हो सकता है क्योंकि वह प्रजनन नहीं कर सकता है। यीशु ने सिखाया, "... जब तक गेहूँ का एक दाना पृथ्वी में गिरकर मर न जाए, तब तक वह अपने आप ही अकेला रहता है; परन्तु यदि वह मर जाता है, तो बहुत फल लाता है" (यूहन्ना 12:24)। प्रजनन के बिना कोई शिष्यत्व नहीं है।
(पृ. 18बी-20)

चरण 6: व्यक्तिगत प्रार्थना अनुरोधों को साझा करके और प्रत्येक व्यक्ति अन्य अनुरोधों के लिए प्रार्थना करके समाप्त करें।

स्रोत: द मेकिंग ऑफ ए डिसाइपल डॉ . कीथ फिलिप्स द्वारा। फ्लेमिंग एच. रेवेल कंपनी द्वारा, 1981। आई°ऍस°बी°ऍन° 0-8007-1181-5. रॉबर्ट ई. कोलमैन द्वारा परिचय। सामग्री (अध्ययन प्रश्नों को छोड़कर) बिना किसी संशोधन के पुस्तक से ली गई है।

संशोधित 20261011